❀ सत्य ❀

कबीर सागर ।

तृतीय खण्ड ।

जिसमें

अम्बुसागर, विवेकसागर और सर्वज्ञसागर संयुक्त है।

भारतपथिक कबीरपंथी-
स्वामी श्रीयुगलानन्द (विहारी) द्वारा संशोधित ।

जिसको
गङ्गाविष्णु श्रीकृष्णदास
अध्यक्ष "लक्ष्मीवेङ्कटेश्वर" छापेखानेमें
मैनेजर पं० शिवदुलारे वाजपेयीने मालिकके लिये
छापकर प्रसिद्ध किया ।

संवत् १९७८, शके १८४३.

कल्याण-मुंबई.